PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

कारक का अर्थ

- वाक्य मे संज्ञा व सर्वनाम के शब्द अत्यधिक मात्रा मे प्रयोग किये जाते है। इन शब्दों का वाक्य मे प्रयुक्त अन्य वाक्यों के साथ क्या सम्बन्ध है? यह ज्ञान कारक के द्वारा होता है।

कारक की परिभाषा

- संज्ञा व सर्वनाम का वह रूप जिससे उसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, कारक कहलाता है।

जैसे -

अध्यापक बालक को किताब पढ़ाता है।

वह पहाड़ों के बीच में है।

प्रीति का भाई हँसता है।

पंकज कलम से लिखता है।

कारक के भेद (8 भेद है)

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. सम्प्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

कारक के भेद

क्रम	कारक	चिह्न	अर्थ
1	कर्ता	ने	काम करने वाला
2	कर्म	को	जिस पर काम का प्रभाव पड़े
3	करण	से, द्वारा	जिसके द्वारा कर्ता काम करें
4	सम्प्रदान	को,के लिए	जिसके लिए क्रिया की जाए
5	अपादान	से (अलग होना)	जिससे अलगाव हो
6	सम्बन्ध	का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे	अन्य पदों से सम्बन्ध
7	अधिकरण	में,पर	क्रिया का आधार
8	संबोधन	हे! अरे! अजी!	किसी को पुकारना, बुलाना

1. कर्ता कारक :(प्रथम विभक्ति)

- जो वाक्य में कार्य को करता है, वह कर्ता कहलाता है। कर्ता वाक्य का वह रूप होता है जिसमे कार्य को करने वाले का पता चलता है।
- कर्ता कारक का विभक्ति चिन्ह 'ने' होता है।

जैसे -

विजय ने अपने बच्चों को पीटा।

दिलीप जयपुर जा रहा है।

अंकित खाना खाता है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

विकास ने एक सुन्दर पत्र लिखा।

2. कर्म कारक (द्वितीय विभक्ति)

- वह वस्तु या व्यक्ति जिस पर वाक्य में की गयी क्रिया का प्रभाव पड़ता है वह कर्म कहलाता है।
- कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह 'को' होता है।

जैसे -

गोपाल ने राधा को बुलाया।

रामू ने घोड़े को पानी पिलाया।

माँ ने बच्चे को खाना खिलाया।

मेरे दोस्त ने कुत्तों को भगाया।

3. करण कारक (तृतीय विभक्ति)

- जिसके द्वारा कर्ता क्रिया करता है, वह करण कहलाता है। यानि, जिसकी सहायता से किसी काम को अंजाम दिया जाता वह करण कारक कहलाता है।
- करण कारक के दो विभक्ति चिन्ह होते है : 'से' और 'के द्वारा'।

जैसे -

बच्चे गाड़ियों से खेल रहे हैं।

पत्र को कलम से लिखा गया है।

राम ने रावण को बाण से मारा।

मिथुन सारी जानकारी पुस्तकों से लेता है।

गुण्डा डण्डे के द्वारा मारा गया।

4. सम्प्रदान कारक (चतुर्थ विभक्ति)

- सम्प्रदान का अर्थ 'देना' होता है। जब वाक्य में किसी को कुछ दिया जाए या किसी के लिए कुछ किया जाए तो वहां पर सम्प्रदान कारक होता है।
- सम्प्रदान कारक के विभक्ति चिन्ह 'के लिए' या 'को' हैं।

जैसे -

माँ अपने बच्चे के लिए दूध लेकर आई।

विकास ने तुषार को गाडी दी।

भिखारी के लिए दो रोटी दी गयी।

रमेश मेरे लिए कोई उपहार लाया है।

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

5. अपादान कारक (पंचम विभक्ति)

- जब संज्ञा या सर्वनाम के किसी रूप से किन्हीं दो वस्तुओं के अलग होने का बोध होता है, तब वहां अपादान कारक होता है।
- अपादान कारक का भी विभक्ति चिन्ह 'से' होता है। से चिन्ह करण कारक का भी होता है लेकिन वहां इसका मतलब साधन से होता है।
- अपादान कारक उसमें होता है जिससे वस्तु अलग हो रही हो।
- यहाँ से का मतलब किसी चीज़ से अलग होना दिखाने के लिए प्रयुक्त होता है।

  जैसे -

  सुरेश छत से गिर गया।

  सांप बिल से बाहर निकला।

  हिमालय से गंगा निकलती है।

  आसमान से बिजली गिरती है।
- करणकारण व अपादन कारक में भेद - जिसकी सहायता से क्रिया की जाती है, वह पद करण कारक होता है। जैसे - रवि आँख से देखता है। 'देखता' क्रिया किसमे सम्पन्न होती है? 'आँख से'। अतः यह पद करण कारक है।

  जिस शब्द से अलग होना पाया जाता है, उसे अपादान कारक कहते है। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। 'पेंड से' पत्ते अलग हुएं अतः पेड़ से' अपादान कारक है। (न कि पत्ते मे)

6. संबंध कारक (षष्ठी विभक्ति)

- संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो हमें किन्हीं दो वस्तुओं के बीच संबंध का बोध कराता है, वह संबंध कारक कहलाता है।
- सम्बन्ध कारक के विभक्ति चिन्ह का, के, की, ना, नी, ने, रा, रे, री आदि हैं।

  जैसे -

  वह राम का बेटा है।

  यह सुरेश की बहन है।

  बच्चे का सिर दुःख रहा है।

  यह सुनील की किताब है।

  यह नरेश का भाई है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

7. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

- अधिकरण का अर्थ होता है – आश्रय। संज्ञा का वह रूप जिससे क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
- इसकी विभक्ति 'में' और 'पर' होती है। भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।
- यदि कोई वस्तु मेज के ऊपर रखी है तो बोलेंगे - किताब मेज पर रखी है।
- यदि कोई वस्तु मेज की रैक मे रखी है तो बोलेंगे - किताब मेज मे रखी है।

जैसे -

वह पहाड़ों के बीच में है।

मनु कमरे के अंदर है।

वह रोज़ सुबह गंगा किनारे जाता है।

महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ था।

फ्रिज में आम रखा हुआ है।

8. संबोधन कारक (अष्टमी विभक्ति)

- संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे किसी को बुलाने, पुकारने या बोलने का बोध होता है, तो वह सम्बोधन कारक कहलाता है।
- सम्बोधन कारक की पहचान करने के लिए ! यह चिन्ह लगाया जाता है।
- सम्बोधन कारक के अरे, हे, अजी आदि विभक्ति चिन्ह होते हैं।

उदाहरण :

हे राम! बहुत बुरा हुआ।

अरे भाई ! तुम तो बहुत दिनों में आये।

अरे बच्चों! शोर मत करो।

हे ईश्वर! इन सभी नादानों की रक्षा करना।

अरे! यह इतना बड़ा हो गया।

हे गूगल! हिन्दी क्या होती है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090